2.3 धर्म सुधार का अर्थ एवं स्वरुप

धर्म सुधार से तात्पर्य धर्म में व्याप्त बुराईयों को समझने और उनमें सुधार के लिए किये जाने वाले प्रयास से है। समकालीन यूरोप में सुधारवादियों ने रोमन कैथोलिक चर्च में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद की। यूरोप में होने वाले धर्म सुधार आन्दोलन से आशय रोमन कैथोलिक चर्च के विभाजन से भी समझा जाता है। 16वीं शताब्दी तक चर्च एवं पोप में अनेक बुराइयाँ घर कर गयी थीं, संसार के प्रति मोह, विलासिता, भ्रष्टाचार तथा पोप द्वारा धन की लूट (ईन्डल्जेंस की बिक्री के द्वारा) अर्थात पोप की नैतिकता का पूरी तरह पतन हो चुका था। 1517 ई० में मार्टिन लूथर द्वारा कैथोलिक चर्च में व्याप्त बुराईयों एवं पोप की निरंकुश सत्ता का पुरजोर विरोध किया गया, इसे ही व्यापक रूप में धर्म सुधार आन्दोलन कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म के भीतर अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ, जिनमे, प्रोटेस्टेंट, कैल्विनिस्ट, प्यूरिटन्स, ऐनाबैप्टिस्ट, एन्गिलकंस,

प्रेस्बिटेरेनियंस प्रमुख हैं। इसके पश्चात कैथोलिक चर्च ने भी स्वयं में व्याप्त बुराईयों को समाप्त एवं अनेक सुधार करते हुए प्रति धर्म सुधार आन्दोलन शुरू किये। परंतु इससे कहीं अधिक यह महत्वपूर्ण है कि इसके पश्चात धर्म से इतर सामाजिक एवं आर्थिक मामलों के सम्बन्ध में लोगों की सोच में व्यापक परिवर्तन आया। अब लोग धर्म को नहीं बल्कि मानव को अधिक महत्व दे रहे थे। पूंजीवाद एवं अर्थव्यवस्था के विकास के लिए नए कदम उठने लगे थे। इस इकाई में हम आगे पढेंगे कि यह विरोध केवल चर्च में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ ही नहीं था, बल्कि एक ऐसा क्रन्तिकारी कदम था, जिसने चर्च कि जर्जर व्यवस्थाओं पर ऐसी चोट करी कि उसकी जड़ें तक हिल गयी और यह सब क्यों और कैसे हुआ? आइये इसका जवाब हम आगे देखते हैं–

2.4 पृष्ठभूमि

ऐसा नहीं है कि लोगों में धर्म सुधार की भावना का जागृत होना कोई नयी घटना थी, इससे पूर्व भी चर्च एवं चर्च के सांगठनिक गतिविधियों के सम्बन्ध में समय–समय पर विरोध प्रतिरोध होते ही रहे हैं। पंद्रहवीं सदी में कन्सिलियर आन्दोलन के द्वारा पोप के अधिकारों को सीमित करने कि मांग रखी गयी और सोलहवीं सदी में पुनर्जागरण के पश्चात् जब धर्म के स्थान पर मानव को केंद्र में रखकर समाज की कल्पना ने अनेक बुद्धिजीवियों द्वारा चर्च कि बुराईयों को समाप्त करने के लिए ईसाई धर्म की प्राचीन व्यवस्थाओं की ओर लौटने की बात की गई, तथा बाइबिल का क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद के बारे में सोचा जाने लगा जो अब तक प्राचीन लैटिन भाषा में लिखी होती थी, और जिस पर पादरी वर्ग का एकाधिकार था। विक्लिफ तथा जॉन हुस जैसे लोगों ने जो आंदोलन चलाए उनमें किसानों, मजदूरों एवं निम्नवर्गीय का सहयोग प्राप्त था। परन्तु 16वीं सदी का धर्मसुधार आन्दोलन बुर्जुआ एवं धनिक वर्ग के समर्थन से ही संभव हो सका था।

जैसा कि आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके होंगे कि सोलहवीं सदी यूरोप में पुनर्जागरण ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को उद्वेलित किया। अब लोगों ने तर्क के आधार पर समझना आरम्भ किया, तथा धर्म केन्द्रित समाज की गाँठ कमज़ोर होने लगी। पुनर्जागरण से पूर्व समूचे यूरोप पर कैथोलिक चर्च का एक छत्र अविभाज्य साम्राज्य था, रोम से लेकर सुदूर गावं तक चर्च का ही राज था। व्यक्ति जन्म के साथ स्वयं को चर्च की शरण में पाता और मृत्यु के साथ ही उसे चर्च से छुटकारा मिल पाता था, जिसका विरोध करने का साहस कोई नहीं कर सकता था। लोगों को अन्य राजकीय करों के साथ चर्च कर भी अनिवार्य रूप से देना होता था, जिसका उपयोग वे एश्वर्य एवं विलासितापूर्ण जीवन जीने में करते थे। पोप एवं उसकी संस्था दिनोंदिन भ्रष्ट होती जा रही थी। एक प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि पवित्र रोमन साम्राज्य और पोप ने धर्म को जनता के लिए एक बोझ की तरह बना दिया था जोकि धीरे–धीरे असह्य होता जा रहा था, जिसका प्रस्फुटन धर्म सुधार आन्दोलन के रूप में सामने आया, जिसके परिणामस्वरुप ईसाई धर्म के अन्दर अनेक सम्प्रदायों का निर्माण हुआ जैसे– लूथरवाद, कैल्विनवाद, प्यूरिटनवाद, प्रेसबिटेरियन इत्यादि। इसके साथ ही कैथोलिकों ने प्रति धर्म सुधार आन्दोलन चलाया, और चर्च की कमियों को दूर करने का निर्णय लिया। यह धर्म सुधार आन्दोलन कई क्षेत्रों में हुआ। चर्च और समाज कि नैतिकता के साथ ही संरचना में भी सुधार किया गया। इसाई धर्म के वास्तविक स्वरुप की व्याख्या की गयी और साथ ही अनेक रुढ़िवादी सिद्धांतों में सुधार भी किया गया। अतः आगे हम देखेंगे कि यह धर्म सुधार आन्दोलन केवल कैथोलिक चर्च में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ ही नहीं था बल्कि मानव समाज से जुड़े पहलुओं पर प्रहार करने वाली ताकतों के खिलाफ भी था।

2.5 धर्म सुधार आन्दोलन के कारण

धर्म सुधार के लिए जो कारण उत्तरदायी थे, यदि उन पर नज़र डाली जाये तो हम यह पाते हैं कि लगभग 14वीं 15वीं शताब्दी के मध्य कैथोलिक चर्च को अनेक आतंरिक समस्याओं का सामना करना पड रहा था। चर्च के अधिकारी अब अपना ध्यान आध्यात्म से हटाकर भोग–विलास में लगा रहे थे। अराजकता, युद्ध बिमारियां. एवं फसल बर्बाद होने के कारण, जिसे लोग पहले ईश्वर का क्रोध मानते थे पर अब लोगों के मन में धर्म, चर्च को

लेकर अनेको सवाल थे; पर उनका जवाब देने वाला कैथोलिक चर्च में कोई विवेकशील धर्माधिकारी नहीं था। धर्मगुरुओं के भाषण भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर पा रहे थे। परिस्थितियां चर्च की अक्षमता और धर्म गुरुओं के भ्रष्टाचार की कहानियां स्वयं बयान कर रही थीं। 14वीं–15वीं सदी के धार्मिक आन्दोलन कमज़ोर भले ही थे परन्तु इन आंदोलनों ने 16वीं सदी में हुए धर्म सुधार आन्दोलन के बीज जरुर बो दिए थे। वायक्लिफ और हस को उनके आंदोलनकारी विचारों तथा पोप विरोधी होने के कारण फांसी दे दी गयी। सोचने वाली बात यह है कि आखिर क्या कारण रहे होंगे जिससे कि यह सक्रीय एवं सफल हो गया। अतः आइये अब हम उन कारणों को देखते हैं।

2.5.1 राष्ट्रीय चेतना का विकास

पुनर्जागरण चेतना के कारण राज्य से धर्म–चर्च को अलग करने की कल्पना की जाने लगी, अतः अनेक राष्ट्रीय राज्यों के निर्माण पर बल दिया जाने लगा। मध्यकाल में ही संप्रभुता को लेकर चर्च एवं राज्य के बीच विवाद उत्पन्न हो गया था, चर्च ने धार्मिक एवं न्यायिक मामलों पर अपने दावे पेश किये और राज्य ने राजनैतिक संप्रभुता का। चर्च के पास अनेक व्यापक अधिकार थे, वित्तीय एवं विधिक मामले उसके पास होने के कारण वह अधिक शक्तिशाली था। परन्तु अब अनेक राजा और राजकुमार स्वछंद रूप से अपनी जनता पर शासन करना चाहते थे, जिसमें वे चर्च एवं पोप की भागीदारी के बिलकुल भी समर्थक नहीं थे। अब वे इस बात को समझ चुके थे कि जितना ज्यादा नियंत्रण होगा उतना ही अधिक उन्हें राजस्व प्राप्त होगा, जिससे वे अपना और अधिक राज्य विस्तार और विकास कर सकते थे। जर्मनी में चर्च विरोधी भावनाएं तीव्र थीं और इसी कारण लूथर और उसके विचारों को दबे रूपों में ही सही पर राज्य एवं कुलीन वर्ग का समर्थन मिल रहा था। स्विट्ज़रलैंड में भी ज्विंगली ने नगर परिषदों से अपने सुधार आंदोलनों में समर्थन एवं सहयोग की अपील की। अब लोग यह सहन नहीं कर सकते थे कि उनके राज्य का धन कर के रूप में रोम जाये, क्योंकि अब लोग इस धन का उपयोग अपने राज्य के विकास में लगाना चाहते थे, अतः हम यह स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि जब राष्ट्रीय चेतना का विकास हो रहा था तो लोग चर्च के प्रभाव से विमुख होते जा रहे थे।

2.5.2 प्रिंटिंग प्रेस

सोलहवीं सदी में प्रिंटिंग प्रेस के निर्माण ने भी धर्म सुधार आन्दोलन को और अधिक प्रभावी बना दिया। अब सुधारकों के विचारों को आमजन तक पहुचने में आसानी हो गयी। लोक भाषाओँ में सुधारकों की बातें पहुँचने लगी और इसी के साथ बाइबिल एवं अन्य धर्मशास्त्रों का अनुवाद और उसकी अनेक प्रतियां उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध होने लगी। लगभग 10 लाख बाइबिल की प्रतियाँ प्रकाशित की गयीं। सोलहवीं सदी के अंतिम दशक तक इंग्लैण्ड के उच्च वर्ग तक लूथर के विचार उसकी किताबों के द्वारा अधिक लोकप्रिय होने लगे क्योंकि इन वर्गों के पास इन छपी हुई किताबों को खरीदने और इन्हें पढ़ने की क्षमता थी। जहाँ वायक्लिफ और हेस के विचार प्रिंटिंग प्रेस ना होने के कारण उनके क्षेत्र के बाहर शायद ही जाने गये, परन्तु लूथर के विचार सम्पूर्ण जर्मनी और जर्मनी के बाहर भी लोगो को प्रभावित कर रहे थे, और यह सब केवल प्रिंटिंग प्रेस के कारण ही संभव हो सका था। धर्म सुधार आन्दोलन के प्रचार के लिए इन प्रिंटिंग प्रेस की सहायता से न केवल किताबों, धर्मशास्त्रों का अनुवाद बल्कि अनेक तस्वीरें और कार्टून्स को भी शामिल किया गया।

2.5.3 मानववाद

धर्म सुधार आन्दोलन के प्रसार में मानववाद की भी भूमिका रही है। मानववाद का अर्थ उन सभी विषयों के अध्ययन से है, जो मानव से सम्बंधित हो। अर्थात समाज का केन्द्रीय विषय मानव, मानव जीवन में रूचि, मानव की समस्याओं का अध्ययन, मानव का आदर इत्यादी होना चाहिए। इसके अंतर्गत मानव के बौद्धिक चिंतन का विकास से तर्क एवं आलोचन को बल मिला। वास्तव में मानववाद प्रत्यक्ष रूप से धर्म सुधार आन्दोलन से जुडा हुआ तो नहीं था, परन्तु फिर भी इसने आलोचना का हथियार तो थमा ही दिया था, जिसके द्वारा चर्च एवं पोप के

भ्रष्ट संगठन पर प्रहार करना आसान हो गया। यह अवश्य ही ध्यान देने की बात है कि मानववादी लेखकों और समाज सुधारकों (खास कर मार्टिन लूथर) का कोई सम्बन्ध नहीं था, परन्तु इरैस्मस के विचारों का प्रभाव कहीं न कहीं अवश्य ही दिख पड़ता है। डेसिडेरियस इरैस्मस (1466–1536) को उत्तरी मानववाद का सर्वश्रेष्ठ लेखक माना जाता है, उसने धर्मग्रंथों के महत्व के साथ ही पोप एवं अन्य धर्माधिकारियों के एकाधिकार की आलोचना की, उसने चर्च के रुढ़िवादी संस्कारों की भी आलोचना की जो मनुष्य के लिए असह्य थे। लूथर के अलावा हमें कैल्विन और ज्विंगली के विचारों से भी यह पता चलता है कि उनके विचारों का बौद्धिक आधार मानववाद ही था, जिसने उन्हें धर्म सुधार आन्दोलन के लिए उद्वेलित किया।

2.5.4 बुर्जुआ वर्ग का उदय

बुर्जुआ वर्ग के उदय को भी धर्म सुधार आन्दोलन का कारण माना जाता है। मार्क्स और एंगेल्स धर्म सुधार आन्दोलन को क्रान्तिकारी घटना मानते हैं। क्योंकि यह वर्ग (बुर्जुआ) सामंतवाद का विरोधी था, जर्मनी में इनका उदय पीजेंट वार के दौरान हो रहा था, जो कि जर्मनी के सामाजिक–आर्थिक संघर्ष की कहानी है। धर्म सुधार आन्दोलन इन्हीं संघर्षो की अभिव्यक्ति है। यह माना जाता है कि बढती हुई पूंजीवादी वयवस्था ने वणिक समुदाय के धन संपत्ति के विस्तार में योगदान दिया और लूथर, केल्विन, ज्विंगली इत्यादि ने इन महत्वपूर्ण लोगों को प्रभावित किया परन्तु इसके बावजूद यह सवाल उठता है कि क्या वास्तव में इन नए बुर्जुआ वर्ग कि संपत्ति में वृद्धि हुई थी, राजकुमारों ने आर्थिक प्रगति के लिए कोई कर वृद्धि किये थे? उदाहरण के रूप में स्काटलैंड को देख सकते हैं।

2.5.5 पोप एवं चर्च में दोष

कैथोलिक चर्च का प्रसार सादगी, सेवा भाव और संतों के प्रभावी आचरण के कारण हो सका था, परन्तु 14वीं–15वीं सदी से ही उनमें उनमे अनेक कमियां आनी शुरू हो गयीं थी। पोप द्वारा चर्च के विभिन्न पदों को बेचा जाने लगा था, जो धर्माधिकारी वर्ग अब तक संत का जीवन जी रहे थे, व्यभिचारी होते जा रहे थे, जिनकी अनेक नाजायज संताने थीं। इन संतानों के जीवन को सुरक्षित बनाने के लिए वे निर्लज्ज होकर अनेक यत्न कर रहे थे। जुलियस II (1505–1513) पोप होते हुए भी सैनिक कार्यों में रूचि लेता था। लियो X (1513–1529) एक कला प्रेमी था, जिस पर पुनर्जागरण का ऐसा प्रभाव हुआ कि उसने इन्हें मूर्त रूप देने के लिए लोगों पर विभिन्न कर लगाकर आर्थिक शोषण भी करना प्रारंभ कर दिया।

इस आर्थिक शोषण का सबसे घिनौना रूप क्षमा–पत्रों (इन्डल्जेंस) के रूप में देखा गया। वास्तव में ईसाई धर्म में अपने पापों के प्रायश्चित के लिए पादरी के समक्ष कंफेशन करना होता था, जिसका आधार यह होता है कि, मन से अपने पापों को स्वीकार करने और प्रायश्चित करने के बाद फिर से अपनी इस भूल को दुहरायेगा नहीं, तो उस क्षमा के योग्य समझा जाता था और क्षमा करने का सबसे अधिक अधिकार पोप के पास था। वास्तव में यदि देखा जाए तो वह भी पूरी तरह क्षमा नहीं कर सकता था, बल्कि ईश्वर द्वारा उसे क्षमा कर दिया जायेगा ऐसा वह केवल आश्वासन दे सकता था लेकिन अपने निकृष्टतम रूप में प्रयाश्चित हेतु क्षमा के लिए क्षमा–पत्रों को बेचा जाने लगा। ऐसा कहा जाता था कि इन पत्रों को खरीदने से वह न केवल पिछले पापों से मुक्त ही नहीं हो जाता है, बल्कि भविष्य में भी यदि वह कोई पाप करे तो उसे उससे भी मुक्ति मिल जाएगी। टेटजेल द्वारा यह कहना कि जैसे ही इस धन पेटिका में सिक्कों के गिरने की आवाज़ आती है, स्वर्ग में उसका घर बन जाता है। ये सब बाते बुद्धिजीवियों द्वारा अस्वीकार्य थीं।

अतः यह स्पष्ट है कि यूरोपीय समाज का प्रत्येक वर्ग किसी न किसी रूप में धर्म विरोधी होता जा रहा था और इन घटनाओं से लोगों के अन्दर चर्च विरोधी भावनाए उत्पन्न होने लगीं, जिन्हें आसानी से शांत नहीं किया जा सकता था। ये अन्दर ही अन्दर विरोध की चिंगारियां तो थी, आवश्यकता थी तो बस नेतृत्व की जो एक फूंक से इनके अन्दर की क्रांति को भड़का सके, और मार्टिन लूथर ने इसे नेतृत्व प्रदान किया।

PTO